शिक्षाशास्त्रीय निर्णय और कार्यात्मक अधिगम-स्वरूप, -

Meaning of Pedagogy -

शिक्षणशास्त्र का अर्थ :-

जब अपने शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए अध्यापक विशेष प्रकार के भाषा शिक्षण का प्रयोग करता है जिसे भाषा शिक्षण कहते हैं।

शिक्षणशास्त्रीय निर्णय :-

वह निर्णय जो शिक्षण शास्त्र पर आधारित होता है उसे शिक्षणशास्त्रीय निर्णय कहते हैं। ऐसी प्रक्रिया जिससे प्रत्येक सम्पूर्ण विषय की वस्तु विशेष पर भाषा के नियमों के आधार पर निर्णय लिया जाता है।

शिक्षणशास्त्र के चार चरण होते हैं।

(1) उद्देश्य निर्धारित (objective formulation)

(2) अधिगम अनुभव (Learning experience).

(3) विधि / प्रविधि एवं सामग्री (Method / Technique and Material Aids)

(4) मूल्यांकन (Evaluation)

(1) उद्देश्य निर्धारण (Objective Formulation) :- अध्यापक को सबसे पहले शिक्षण उद्देश्यों को निर्धारित करना चाहिए। अतः उद्देश्यों को निर्धारण होने के बाद ही अध्यापक शिक्षण की प्रक्रिया प्रारम्भ कर सकता है।

(2) अधिगम अनुभव :- अध्यापक उद्देश्यों को निर्धारित करने के बाद उसे अधिगम अनुभव होना अति आवश्यक है। अधिगम अनुभव के आधार पर अध्यापक छात्रों को (अच्छी तरह से शिक्षण) का कार्य कर सकता है। जो अध्यापक अधिगम अनुभव में (जितना ही अधिक अनुभवी) होगा उसका शिक्षण अधिक प्रभावशाली होगा।

(3) विधि / प्रविधि एवं सामग्री :-

अध्यापक शिक्षण के उद्देश्यों को प्राप्त इसमें

PUD

करने के लिए समुचित विधियों एवं पाठ से सम्बन्धित सहायक सामग्री का प्रयोग करता है। जिससे जब अध्यापक विधियों तथा सहायक सामग्री से सहायता से शिक्षण कार्य करता है तो ~~छात्र~~ छात्र ~~को~~ आसानी से पाठ को समझ ~~जाते हैं~~ जाता है।

(प) मूल्यांकन (Evaluation):- पाठ को पढ़ा लेने के बाद अध्यापक छात्रों का मूल्यांकन करता है कि उन्होंने कितनी सफलतापूर्वक दिये गए ज्ञान को ग्रहण किया है। मूल्यांकन से छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों की जानकारी हो जाती है। ~~मूल्यांकन~~ मूल्यांकन से सामान्य तथा असामान्य छात्रों के बारे में ~~जानकारी~~ जानकारी प्राप्त होती है।

Learning (अधिगम) :— अधिगम किसी स्थिति के प्रति सक्रिय प्रतिक्रिया है। Ex बालक जलती हुई मोमबत्ती की लौ को छू लेता है तो उसका हाथ जल जाता है अतः वह जलती हुई मोमबत्ती से दूर रहता है। इस प्रकार बालक सीख जाता है कि लौ को हाथ लगाने पर जल जायगा। इस प्रकार प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से व्यक्ति के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन होता है। अनुभवों द्वारा व्यवहार में होने वाले इन परिवर्तनों को साधारण रूप में सीखने की संज्ञा दी जाती है।

सीखने की यह प्रक्रिया जीवनपर्यन्त चलती रहती है।

स्किनर के अनुसार

Learning (अधिगम) :— व्यवहार के अर्जन में उन्नति की प्रक्रिया को अधिगम कहते हैं।

प्रेसे के अनुसार

Learning (अधिगम) :—

अधिगम एक अनु है जिसके द्वारा कार्य में परिवर्तन या समायोजन है तथा व्यवहार की नयी विधि प्राप्त होती है।

Factors that Influence Learning

(अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक)

Scanned with CamScanner

अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित है।

(1) Motivation (अभिप्रेरणा) :- अभिप्रेरणा के बिना व्यक्ति कोई कार्य सही प्रकार से नहीं कर सकता है। जब किसी व्यक्ति को प्रेरित किया जाता है तब वह व्यक्ति आसानी से किसी भी तथ्य को सीख जाता है। अतः अधिगम के लिए अभिप्रेरणा अति आवश्यक है।

(2) Proper orientation (उचित केन्द्रता) :- किसी तथ्य या पाठ्यवस्तु को तभी समझ सकता है छात्र जब उसमें उचित केन्द्रता हो। इस प्रकार छात्र केन्द्रित होकर किसी तथ्य या पाठ्यवस्तु को आसानी से सीख जाता है।

(3) students desires (छात्रों की इच्छायें) :- छात्रों की ~~इच्छायें~~ इच्छायें इस प्रकार है।

(a) पहचान पाने की इच्छा :- जब छात्रों को नाम से बुलाया जाता है तो वह काफी खुश हो जाता है तथा उसमें अधिगम की भावना उत्पन्न होती है।

Scanned with CamScanner